Geo-IIIrd Papper

Q.N.O. 4 :— विश्व कृषि प्रदेशों का वर्णन कीजिए ?

Ans:→ 'कृषि' शब्द का व्यवहार केवल फसलें उगाने के अर्थ में नहीं होता फसल उत्पादन एवं पशुपालन दोनों ही कार्यों से होता है क्योंकि दोनों ही भूमि पर आधारित तथा मिट्टी की उत्पादन क्षमता पर निर्भर है। फसलों एवं पशुओं का कृषि में परस्पर घनिष्ठ सम्बंध भी होता है। कृषि प्रदेश ऐसे विस्तृत क्षेत्र होते हैं, जहाँ कृषिगत दशाओं खासकर फसलों की किस्मों तथा उनकी उत्पादन विधि में समरूपता मिलती है तथा कृषि भूमि के उपयोग की विशिष्टता सबंधता पाई जाती है। यह सम्बंधता बहुधा कृषि प्रदेश विशेष में कृषि कार्य में प्रयोग किये जाने वाले उपकरणों तथा कृषक के आवास, रहन-सहन के ढंग तथा जीवन स्तर में परिलक्षित होती है।

सन 1936 में डॉ० हिटलसी (Dr. Whittlesey) महोदय ने विश्व विश्व के कृषि प्रदेशों को विभक्त किया था उसने अपने विभाजन में निम्नलिखित तत्वों को वर्गीकरण का आधार बनाया जो निम्न हैं:—

(1) कृषि उपज तथा पशुओं की स्थिति
(2) कृषि के प्रकार
(3) पूंजी, श्रम और संगठन
(4) कृषि उपज के उपभोग की विधियाँ
(5) वैज्ञानिक उपकरणों का उपयोग

उपर्युक्त सभी आधारभूत तत्वों को सम्मिलित कर हिटलसी ने विश्व के कृषि प्रदेशों का अग्रानुसार वर्गीकरण प्रस्तुत किया है जो निम्न हैं:

(1) घुमक्कड़ (चलवासी) पशुचारण प्रदेश।
(2) व्यापारिक पशुपालन प्रदेश।
(3) स्थानान्तरण शील कृषि प्रदेश।
(4) प्रारम्भिक स्थायी कृषि प्रदेश।
(5) चावल प्रधान गहन निर्वाहन कृषि प्रदेश।
(6) चावल विहीन गहन निर्वाहन कृषि प्रदेश।
(7) व्यापारिक बगानी प्रदेश।

Scanned with CamScanner

(8) भूमध्य सागरीय कृषि प्रदेश।
(9) व्यापारिक अन्न उत्पादक कृषि प्रदेश।
(10) व्यापारिक फसल एवं पशुपालन कृषि प्रदेश।
(11) निर्वाहक उपज एवं पशुपालन कृषि क्षेत्र।
(12) व्यापारिक दुग्ध पशुपालन कृषि क्षेत्र।
(13) विशिष्ट बागानी कृषि प्रदेश।

(1) **घुमक्कड़ (चलवासी) पशुचारण प्रदेश :→** घुमक्कड़ पशुचरण प्रदेश को अत्यन्त ही प्राचीन अर्थ व्यवस्था की संज्ञा दी जाती है। पशुओं को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जा कर चराया जाता है। यह उन प्रदेशों में अधिक प्रचलित है जहाँ वर्षा बहुत कम होती है एवं जलवायु विषम पायी जाती है। समस्त आर्थिक जीवन पशुओं पर ही निर्भर रहता है। इस प्रकार के कृषि क्षेत्र अफ्रीका, एशिया के शुष्क प्रदेश, सिमान्त टुन्ड्रा प्रदेश आदि प्रमुख हैं। पशुओं में भेड़, बकरी, ऊँट, गाय, बैल, याक तथा रेनडियर होते हैं। घोड़े चढ़ने तथा एक स्थान से दूसरे स्थान जाने के लिये उपयोग किया जाता है। भेड़, बकरी, ऊँट, गाय आदि से दुग्ध एवं मांस प्राप्त होता है।

(2) **व्यापारिक पशुपालन कृषि प्रदेश :→** इस कृषि पशुपालन प्रदेश की प्रधानता अन्न की खेती की नगण्यता। इस प्रदेश में पशुपालन किया जाता है। पशुपालन कार्य सभ्य लोगों द्वारा आधुनिक काल में शीतोष्ण घास के मैदानों तथा तथा उष्ण कटिबंधीय सवाना प्रदेश में किया जाता है। इस प्रकार के कृषि में विश्व का केवल 1% लोग ही लगे हैं। इस प्रकार के पशुपालन का मुख्य विशेषता एक ही स्थान पर टिक कर करते हैं। चारागाह बड़े-बड़े क्षेत्रों में विस्तृत होते हैं। पशुओं में गाय, भेड़, बकरियाँ, बैल आदि पाली जाती है। इस प्रकार के पशुपालन उ० एवं द० अमेरिका द० अफ्रिका, आस्ट्रेलिया एवं न्यूजीलैंड, शीतोष्ण कटिबंधीय घास के मैदान, पूर्वी अफ्रीका के पठारी भाग, सोवियत संघ के कैस्पियन सागर के उत्तर-पूर्व वाले क्षेत्र आदि में यह प्रदेश मिलता है।

(5) चावल प्रधान गहन निर्वाहन कृषि प्रदेश :— इस प्रदेश की कृषि में चावल प्रधान फसल है। इस क्षेत्र की भूमि प्राचीन काल से ही कृषि के अन्तर्गत होने के कारण छोटे छोटे टुकड़ों में पायी जाती है। इन प्रदेशों में मशीनों का प्रयोग किया जाता है। इन प्रदेशों में चावल के अतिरिक्त गेहूँ, गन्ना, जूट आदि की भी उपज होती है।

(6) चावल विहीन गहन निर्वाह कृषि प्रदेश :→ इस प्रकार की कृषि को शुष्क कृषि (Dry farming) भी कहते हैं। इस प्रकार की कृषि प्रदेश में चावल की प्रधानता नहीं होती है। यहाँ की कृषि गेहूँ, ज्वार, बाजरा, चना, जौ, दलहन, तिलहन आदि फसलें हैं। इन फसलों को खरीफ फसल भी कहा जाता है। जो शरद ऋतु में बोई जाती है और ग्रीष्म ऋतु के आरम्भ में काट ली जाती है। भारत, पाकिस्तान तथा चीन के भीतरी भागों में जहाँ वर्षा कम होती है वहाँ सिंचाई द्वारा कृषि उत्पादन की जाती है।

(7) व्यापारिक बगानी कृषि प्रदेश :→ इस प्रकार की कृषि फार्मों पर होती है। बगानी कृषि किसी क्षेत्र के सम्पूर्ण क्षेत्रफल के थोड़े भाग पर ही होती है। इस प्रदेश में उपजने वाली फसलों में केला, कोको, कहवा, सील, रबर, गन्ना, नारियल, चाय, मिर्च-मसाले आदि हैं। जहाँ सालों भर तापमान 17.7°C से ऊँचा तापमान रहता है वहाँ बगानी कृषि की जाती है। केला प्रधानतः पश्चिमी द्वीप समूह मध्य अमेरिका, गन्ना क्यूबा, वेनेजुएला के समुद्री तटों, कहवा कोलम्बिया के पठार, गन्ना पेरू के समुद्र तट, पूर्वी अफ्रिका तट, मेडागास्कर के उत्तरी तट पर पैदा होती है। भारत के दक्षिणी भाग में नारियल तथा कहवा नीलगिरि पर्वत पर श्रीलंका के पहाड़ी पर चाय एवं मलेशिया तथा इन्डोनेशिया में रबर की प्रधानता है।

(8) भूमध्य सागरीय कृषि प्रदेश :→ इस प्रकार की कृषि कृषि के तरीकों, नगरों की निकटता, वर्षा की मात्रा, कृषकों के

Scanned with CamScanner

पशुओं का देखभाल वैज्ञानिक ढंग से की जाती है। चरागाह में एक स्थायी घर होता है जहाँ चरागाह सम्बंधी सारी आवश्यक सामग्री तथा व्यवस्था रहती है। घर के आस-पास कुछ क्षेत्रों में खेती होती है।

(3) स्थानान्तरण कृषि प्रदेश :→ इस कृषि प्रदेश में जंगल साफ करके किसान खेत बनाते हैं। इस खेत पर साल दो साल खेती करने के बाद जब उसकी उर्वरता समाप्त हो जाती है, तो उसे छोड़कर दूसरी जगह खेत बनाते हैं। इस प्रकार खेत बराबर बदलते रहते हैं। इस प्रकार के कृषि प्रदेश में केवल फसलें उगाई जाती है पशुपालन नगण्य होता है। इस प्रकार के कृषि को स्थानान्तरण कृषि कहते हैं। इस कृषि प्रदेश में फसलों में खाद्यफसलों की प्रधानता रहती है। इन फसलों में मक्का, ज्वार, बाजरा तथा धान प्रमुख फसलें हैं। यह प्रदेश मलाया तथा इन्डोनेशिया में इसे लदांग (Ladang), फिलीपीन्स में कैंगीन (Caingin), श्रीलंका में चेना (Chena), रोडेशिया में मिल्पा (Milpa) तथा सूडान में न्गासू (Ngasu) कहते हैं। यूरोप में स्वीडेन कहते हैं। इस प्रकार के खेती में खेती की उपज से किसान परिवार का सालभर भरण-पोषण मुश्किल से होता है। अतः किसान मछली मारकर, शिकार करके अथवा वन से खाने लायक वस्तुओं का संग्रह करके भी जीवन यापन करते हैं। अतः किसान की आर्थिक स्थिति निम्न स्तर की होती है।

(4) प्रारम्भिक स्थायी कृषि प्रदेश :→ इस प्रकार की कृषि में स्थान परिवर्तन नहीं होता है। इस प्रकार की कृषि गहन कृषि के लिये उपयुक्त है। इस कृषि पद्धति में विश्व की एक-तिहाई जनसंख्या संलग्न है। फसलों में खाद्य फसलों की प्रधानता है। खाद्य फसलों में चावल का सर्व प्रधान स्थान है। इसके अलावे शुष्क भागों में गेहूँ, जौ, चना, ज्वार बाजरा के साथ-साथ पशुपालन भी किया जाता है। पशुओं में गाय-बैल, भैंस, बकरी, घोड़ा, मुर्गी आदि हैं। पशुओं के गोबर से खाद एवं जलावन के रूप में प्रयोग किया जाता है। यह कृषि प्रदेश मानसून एशिया में केन्द्रित है। जैसे- गंगा, ब्रह्मपुत्र, इरावदी, मिनाम, मेकांग, सिक्यांग, यांगटिसिक्यांग, ह्वांगहो आदि नदियों के विस्तृत मैदान में मिलते हैं।

Scanned with CamScanner

तकनीकी ज्ञान, शासकीय संरक्षण के अनुसार भिन्न-२ भागों में कृषि के ढंग और उत्पादन भिन्न-२ होते हैं। उदाहरण के लिये उत्तरी अफ्रीका में मोरक्को, अल्जीरिया और ट्यूनीशिया में वर्षा की कमी के कारण जौ, अंगूर और जैतून की कृषि की जाती है। ग्रीस में अंगूर, स्पेन में अंगूर एवं नारंगी, कैलिफोर्निया में नारियल, शफ्तालू, इटली में गेहूं आदि की कृषि की जाती है।

(9) **व्यापारिक अन्न उत्पादक कृषि प्रदेश :→** इस प्रकार की कृषि प्रदेश में गेहूं एवं मक्का प्रमुख फसल है। कहीं कहीं तो गेहूं की खेती कुल खेती का 80% तक की जाती है। भागों में पशु के केवल परिवार के लिए दूध, मांस, अण्डे की उत्पादन किया जाता है पशुओं में गाय, मुर्गी -- आदि पाली जाती है। इस प्रदेश में कृषि के लिए सर्वाधिक मशीनों का प्रयोग किया जाता है। यह कृषि प्रदेश में खेतों का आकार बड़ा-बड़ा होता है। इस प्रकार के कृषि प्रदेश मध्यवर्ती अक्षांशों में 30° से 55° उत्तरी एवं दक्षिण किया जाता है। जिसमें - यूरेशिया, द० रूस, साइबेरिया, काकेशस, वोल्गा नदी क्षेत्र, उत्तरी अमेरिका में कनाडा, U.S.A. में अलबर्टा, मैनिटोबा, कोलम्बिया, द० अमेरिका में अर्जेन्टाइना और आस्ट्रेलिया आदि में इसकी खेती की जाती है।

(10) व्यापारिक फसल एवं पशुपालन कृषि प्रदेश :— इस प्रकार की कृषि प्रदेश में पशुपालन एवं कृषि का उत्पादन एक साथ होता है। यहां कृषि मुख्यतः चारे एवं खाने के लिये की जाती है। इसमें श्रम एवं पूंजी की अधिक आवश्यकता होती है। मशीनों का भी अधिक उपयोग किया जाता है। इस प्रकार के कृषि वाले प्रदेशों में संयुक्त राज्य अमेरिका तथा यूरेशिया है। संयुक्त राज्य में इसका विस्तार पूर्वी भाग में विस्तृत क्षेत्र पर मिलता है। यह प्रधानतः ओहायो, इण्डियाना, इलिनायज, आयवा, नेब्रास्का तथा वर्जिनिया आदि राज्यों में केन्द्रित है। इस प्रकार की खेती में फार्म को चार भागों में बांटा जाता है, एक भाग में पशु के लिए चारा, दूसरे में पशु-चारागाह, तीसरे में कोई फसल एवं चौथा भाग में अन्न की प्रधानता होती है।

Scanned with CamScanner

(11.) निर्वाह उपज एवं पशुपालन कृषि प्रदेश :→ इस प्रकार की कृषि रूस में नये विकसित कृषि क्षेत्रों में तथा अविकसित देशों में मिलता है। इस प्रकार के कृषि प्रदेशों में मोटे अनाज जैसे – ज्वार-बाजरा, मक्का आदि की फसल उपजाई जाती है।

(12) व्यापारिक दुग्ध एवं पशुपालन कृषि प्रदेश :→ इस प्रकार के कृषि प्रदेशों का मुख्य उद्देश्य दुधारू पशुओं के लिए कृषि करना होता है। पशुओं में विशेषकर गायों का सर्वाधिक महत्व है। यहाँ गाय की अनेकों जातियाँ मिलती हैं। होल्सटाइन सबसे अधिक दूध देती है पर उससे मक्खन की मात्रा कम निकलती है जबकि जर्सी जाति की गायें कम दूध देती है लेकिन मक्खन अधिक निकलता है। फसलों में चरी की प्रधानता होती है। मक्का तथा जई गायों को खिलाने के लिए ही उपजाये जाते हैं। इस कृषि में अधिक पूँजी तथा श्रम दोनों की आवश्यकता होती है। गायों को रखने खिलाने-पिलाने की व्यवस्था वैज्ञानिक ढंग से करनी पड़ती है। इस प्रकार की कृषि क्षेत्र :–

(i) पश्चिमी यूरोप के देश डेनमार्क, फ्रांस, जर्मनी, ब्रिटेन आदि हैं।

(ii) संयुक्त राज्य अमेरिका और कनाडा का उ०पू० भाग।

(iii) आस्ट्रेलिया एवं न्यूजीलैंड आदि।

(13) विशिष्ट बागानी कृषि प्रदेश :– इस कृषि में भौगोलिक दशाओं की अपेक्षा आर्थिक तथा अन्य दशाओं का अधिक महत्व होता है, इसमें फल-फूल, सब्जी तथा कुछ अन्य फसलों का उत्पादन शहरी जनसंख्या की आपूर्ति हेतु किया जाता है। ऐसी कृषि का विकास संयुक्त राज्य अमेरिका में खाड़ी एवं अटलांटिक तट, कैलिफोर्निया घाटी, मध्य एशिया, पेरू ब्राजील तट एवं दक्षिणी अफ्रीका में अधिक हुआ है। इस प्रकार की खेती का विकास डिब्बाबंदी तथा फसलों को सुरक्षित रखने वाले उद्योगों के कारण अधिक हुआ है।

Scanned with CamScanner